Class 10 Hindi Kshitij Chapter 3: आत्मकथ्य (Aatmakathya) – Notes, प्रश्न-उत्तर और MCQs (2026-27)

ये Aatmakathya Class 10 notes (आत्मकथ्य) CBSE कक्षा 10 हिंदी क्षितिज भाग 2 के तीसरे पाठ को पूरी तरह कवर करते हैं। इसमें जयशंकर प्रसाद का परिचय, कविता की रचना-पृष्ठभूमि, भाव-बिंदु वार व्याख्या, प्रतीकों के अर्थ, छायावादी विशेषताएँ, NCERT प्रश्न-उत्तर, 10 MCQs और मुफ़्त PDF दिया गया है।

नीचे दी गई विषय-सूची से सीधे अपने ज़रूरी भाग पर जाएँ, या पूरे पाठ की तैयारी के लिए शुरू से अंत तक पढ़ें।

विषय-सूची (Table of Contents)

- पाठ परिचय (Chapter Overview)
- मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)
- प्रतीक और उनके अर्थ
- छायावाद की विशेषताएँ इस कविता में
- काव्य-सौंदर्य (Kavya Saundarya)
- शब्दार्थ (Word Meanings)
- लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)
- बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)
- त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)
- सारांश (Summary)
- परीक्षा टिप्स (Exam Tips)
- अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)
- निष्कर्ष (Conclusion)

सभी पाठों के नोट्स चाहिए? Nextoper पर पूरे Class 10 Hindi notes देखें – क्षितिज, कृतिका, स्पर्श और संचयन, पाठ-वार।

पाठ परिचय (Chapter Overview)

जयशंकर प्रसाद (1889–1937) का जन्म वाराणसी में हुआ। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। काव्य: चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर, कामायनी; नाटक: स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी; उपन्यास: कंकाल, तितली, इरावती; कहानी-संग्रह: आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल।

यह कविता 1932 में प्रेमचंद के संपादन में निकली पत्रिका 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक के लिए लिखी गई थी। मित्रों ने प्रसाद से आत्मकथा लिखने को कहा, पर उन्होंने इस कविता में अपनी असमर्थता और अनिच्छा प्रकट की। कवि कहते हैं कि उनका जीवन साधारण है, उसमें दुख और अभाव अधिक हैं, इसलिए उसकी कथा सुनाकर क्या लाभ। कविता में छायावादी सूक्ष्मता, प्रतीकात्मकता और विनम्रता है।

मुख्य बिंदु और व्याख्या (Important Points)

जीवन की नश्वरता और मन रूपी भौंरा

- कवि अपने मन को गुनगुनाते भौंरे के रूप में देखते हैं, जो अपनी कहानी कह रहा है।
- आसपास पत्तियाँ मुरझाकर गिर रही हैं – यह जीवन की नश्वरता और निराशा का प्रतीक है।
- अनंत नीले आकाश में असंख्य जीवन-इतिहास लिखे जा रहे हैं, जो ज़्यादातर व्यंग्य और उपहास ही करते हैं।

आत्मकथा न लिखने के कारण

- कवि को लगता है कि उनका जीवन "गागर रीती" (खाली घड़ा) जैसा है, जिसमें सुख नहीं है।
- वे कहते हैं कि उनकी दुर्बलताएँ और भूलें जानकर लोग उनका ही उपहास करेंगे या मित्र भी उनकी कमियाँ देखेंगे।
- वे अपनी सरलता की हँसी नहीं उड़ाना चाहते और दूसरों की प्रवंचना (धोखा) नहीं दिखाना चाहते।
- उनका मानना है कि उनकी कथा में कुछ भी महान नहीं, इसलिए आत्मकथा लिखने का अभी समय नहीं।

मधुर स्मृतियाँ और प्रिय की छवि

- कवि अपने जीवन के कुछ सुनहरे क्षणों को याद करते हैं, जो सपने की तरह आए और चले गए।
- वे सुख का आलिंगन करते-करते मुस्कुराकर भाग गया – सुख क्षणिक रहा।
- प्रिय के लाल गालों की लालिमा उषा की सुंदर छाया जैसी थी; यही स्मृति कवि की थकी यात्रा का सहारा (पाथेय) है।
- कवि इन निजी स्मृतियों को सबके सामने उधेड़कर नहीं दिखाना चाहते।

निष्कर्ष: मौन ही उचित

- कवि कहते हैं कि छोटे से जीवन की बड़ी-बड़ी कथाएँ क्या कहें; दूसरों की कथाएँ सुनना ही अच्छा है।
- उनकी मौन व्यथा अभी थककर सोई है, उसे जगाना ठीक नहीं।
- यह कविता कवि की विनम्रता, संकोच और जीवन के यथार्थ को स्वीकार करने का भाव दर्शाती है।

प्रतीक और उनके अर्थ

कविता के प्रतीकों पर प्रश्न आते हैं।

प्रतीक	अर्थ
मधुप (भौंरा)	कवि का मन
मुरझाकर गिरती पत्तियाँ	जीवन की नश्वरता और निराशा
गागर रीती	सुखों से खाली जीवन
स्वप्न	क्षणिक सुख
उज्ज्वल गाथा	सुखद और मधुर क्षण
पाथेय	यात्रा का सहारा, स्मृतियाँ
कंथा	अंतर्मन, गुदड़ी
मौन व्यथा	भीतर छिपी पीड़ा

छायावाद की विशेषताएँ इस कविता में

काव्य-सौंदर्य प्रश्नों के लिए।

- व्यक्तिगत भावनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति।
- प्रकृति और मानवीय भावों का सुंदर मेल।
- प्रतीकात्मक और लाक्षणिक भाषा।
- संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली।
- वेदना और सौंदर्य का संयोग।
- मानवीकरण और रूपक अलंकारों का प्रयोग।

काव्य-सौंदर्य (Kavya Saundarya)

पक्ष	विशेषता
भाषा	संस्कृतनिष्ठ, तत्सम प्रधान खड़ी बोली

काव्य-धारा	छायावाद
रस	शांत और करुण (वेदना का भाव)
शैली	आत्मकथात्मक, प्रतीकात्मक
अलंकार	मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश
मुख्य भाव	विनम्रता, संकोच, जीवन की वेदना

शब्दार्थ (Word Meanings)

शब्द	अर्थ
मधुप	भौंरा, यहाँ मन
अनंत-नीलिमा	अंतहीन नीला आकाश
असंख्य	अनगिनत
व्यंग्य-मलिन	व्यंग्य से भरा, धूमिल
उपहास	मज़ाक
दुर्बलता	कमज़ोरी
गागर रीती	खाली घड़ा
प्रवंचना	धोखा
उज्ज्वल गाथा	सुंदर कहानी
आलिंगन	गले लगाना
अरुण-कपोल	लाल गाल
अनुरागिनी	प्रेम भरी
उषा	भोर
स्मृति पाथेय	स्मृति रूपी सहारा
पंथा	रास्ता
कंथा	गुदड़ी, अंतर्मन
मौन व्यथा	चुप पीड़ा

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?

उत्तर: कवि को लगता है कि उनका जीवन साधारण और दुखों से भरा है। उसमें ऐसा कुछ महान नहीं जिसे लोग पढ़ें। वे अपनी भूलें और दूसरों की प्रवंचना उजागर नहीं करना चाहते, इसलिए आत्मकथा लिखने से बचते हैं।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहते हैं?

उत्तर: कवि को लगता है कि उन्होंने अभी जीवन में कोई बड़ी उपलब्धि नहीं पाई है और उनकी व्यथा अभी थककर सोई है। उसे जगाना उचित नहीं, इसलिए वे कहते हैं कि अभी आत्मकथा कहने का समय नहीं।

प्रश्न 3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: पाथेय का अर्थ है यात्रा का भोजन या सहारा। कवि के जीवन में सुख कम रहे; प्रिय के साथ बिताए मधुर क्षणों की स्मृति ही उनके थके जीवन-मार्ग का सहारा है।

प्रश्न 4. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' – कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर: कवि कहना चाहते हैं कि प्रिय के साथ बिताए सुखद क्षण बहुत निजी हैं। उन्हें सबके सामने कहकर वे उपहास का विषय नहीं बनाना चाहते, इसलिए वे उन मधुर क्षणों की कथा नहीं गाएँगे।

प्रश्न 5. कवि ने अपने मन की तुलना भौंरे से क्यों की है?

उत्तर: जैसे भौंरा गुनगुनाता रहता है, वैसे ही कवि का मन अपने जीवन की कहानी गुनगुना रहा है। भौंरा यहाँ मन की भावनाओं और स्मृतियों का प्रतीक है।

प्रश्न 6. 'मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ' किस बात का प्रतीक है?

उत्तर: मुरझाकर गिरती पत्तियाँ जीवन की नश्वरता, निराशा और समाप्त होती आशाओं का प्रतीक हैं।

प्रश्न 7. कवि ने अपने जीवन को 'गागर रीती' क्यों कहा है?

उत्तर: क्योंकि कवि का जीवन सुखों और उपलब्धियों से खाली रहा। उनमें दुख और अभाव अधिक थे, इसलिए वे उसे खाली घड़े जैसा मानते हैं।

प्रश्न 8. आत्मकथ्य कविता किस अवसर पर लिखी गई?

उत्तर: यह कविता 1932 में प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका के आत्मकथा विशेषांक के लिए लिखी गई थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

प्रश्न 1. आत्मकथ्य कविता के आधार पर प्रसाद के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

- विनम्रता: वे अपने जीवन को साधारण और कथा योग्य नहीं मानते।
- संकोची स्वभाव: अपनी निजी भावनाएँ सबके सामने नहीं लाना चाहते।
- सहनशीलता: दुख और अभावों को चुपचाप सहते हैं।
- उदारता: दूसरों की प्रवंचना उजागर नहीं करना चाहते।
- यथार्थवादी दृष्टि: जीवन की नश्वरता और सुख की क्षणिकता को स्वीकार करते हैं।

प्रश्न 2. आत्मकथ्य कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

- भाव पक्ष: कवि की विनम्रता, जीवन की वेदना और मधुर स्मृतियाँ।
- भाषा: संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली, कोमल और लयात्मक।
- प्रतीक: मधुप, गागर रीती, पत्तियाँ, पाथेय, कंथा।
- अलंकार: मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश।
- छायावादी शैली: व्यक्तिगत अनुभूति, प्रकृति-चित्रण और लाक्षणिकता।

प्रश्न 3. कवि की स्मृतियाँ उनके जीवन में किस प्रकार सहायक हैं?

- कवि के जीवन में सुख बहुत कम और क्षणिक रहे।
- प्रिय के साथ बिताए मधुर क्षण उन्हें सपने की तरह याद आते हैं।
- प्रिय के लाल गालों की छवि उषा की लालिमा जैसी सुंदर है।
- यही स्मृतियाँ उनके थके जीवन-पथ का पाथेय (सहारा) बन गई हैं।
- इसलिए वे इन स्मृतियों को निजी रखते हुए उन्हें जीवन का सहारा मानते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs with Answers)

1. आत्मकथ्य कविता के कवि कौन हैं?

(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) जयशंकर प्रसाद (ग) निराला (घ) महादेवी वर्मा

उत्तर: (ख) जयशंकर प्रसाद

2. यह कविता किस पत्रिका के लिए लिखी गई?

(क) सरस्वती (ख) हंस (ग) माधुरी (घ) चाँद

उत्तर: (ख) हंस

3. 'हंस' पत्रिका के संपादक कौन थे?

(क) प्रेमचंद (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ग) निराला (घ) प्रसाद

उत्तर: (क) प्रेमचंद

4. कवि ने मन की तुलना किससे की है?

(क) कोयल (ख) भौंरा (ग) मोर (घ) तितली

उत्तर: (ख) भौंरा

5. 'गागर रीती' का अर्थ है

(क) भरा घड़ा (ख) खाली घड़ा (ग) टूटा घड़ा (घ) मिट्टी का घड़ा

उत्तर: (ख) खाली घड़ा

6. 'पाथेय' का अर्थ है

(क) रास्ता (ख) यात्रा का सहारा (ग) थकान (घ) मंज़िल

उत्तर: (ख) यात्रा का सहारा

7. जयशंकर प्रसाद किस काव्य-धारा के कवि हैं?

(क) प्रगतिवाद (ख) छायावाद (ग) भक्तिकाल (घ) रीतिकाल

उत्तर: (ख) छायावाद

8. प्रसाद की प्रसिद्ध महाकाव्य रचना है

(क) साकेत (ख) कामायनी (ग) प्रियप्रवास (घ) उर्वशी

उत्तर: (ख) कामायनी

9. मुरझाकर गिरती पत्तियाँ किसका प्रतीक हैं?

(क) वसंत (ख) जीवन की नश्वरता (ग) खुशी (घ) प्रकृति की सुंदरता

उत्तर: (ख) जीवन की नश्वरता

10. कविता की भाषा है

(क) ब्रज (ख) अवधी (ग) संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली (घ) उर्दू

उत्तर: (ग) संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली

त्वरित पुनरावृत्ति (Quick Revision)

- कवि: जयशंकर प्रसाद (1889–1937), वाराणसी, छायावाद।
- रचनाएँ: कामायनी, आँसू, लहर, झरना; नाटक स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।
- कविता 1932 में 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक (प्रेमचंद) के लिए।
- मन = मधुप; जीवन = गागर रीती; गिरती पत्तियाँ = नश्वरता।
- आत्मकथा न लिखने के कारण: साधारण जीवन, भूलें, दूसरों की प्रवंचना, उपहास का डर।
- स्मृति पाथेय: प्रिय की मधुर स्मृतियाँ जीवन का सहारा।
- निष्कर्ष: अभी समय नहीं, मौन व्यथा को न जगाएँ।

सारांश (Summary)

आत्मकथ्य में जयशंकर प्रसाद मित्रों के आत्मकथा लिखने के आग्रह पर अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। वे अपने जीवन को सुखों से खाली गागर बताते हैं, अपनी भूलों और दूसरों की प्रवंचना को उजागर नहीं करना चाहते और मानते हैं कि उनकी कथा में कुछ महान नहीं।

कवि कुछ मधुर स्मृतियों को अपने थके जीवन का सहारा बताते हैं, पर उन्हें सबके सामने कहना उचित नहीं समझते। कविता छायावादी प्रतीकों, संस्कृतनिष्ठ भाषा और विनम्र भाव के लिए प्रसिद्ध है।

परीक्षा टिप्स (Exam Tips)

- कवि के आत्मकथा न लिखने के कारणों पर प्रश्न लगभग हर वर्ष पूछे जाते हैं।
- प्रतीक तालिका (मधुप, गागर रीती, पाथेय) याद करें।
- काव्य-सौंदर्य में छायावाद की विशेषताएँ जोड़ें।
- पद्यांश प्रश्नों में भावार्थ और भाषा पर ध्यान दें।
- उत्तर में कविता की रचना-पृष्ठभूमि (हंस, 1932) का उल्लेख करें।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

आत्मकथ्य कविता का मुख्य भाव क्या है?

कवि की विनम्रता और आत्मकथा न लिखने का कारण – साधारण, दुखभरा जीवन।

कवि ने किसके आग्रह पर यह कविता लिखी?

प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक के लिए मित्रों के आग्रह पर।

मधुप किसका प्रतीक है?

कवि के मन का।

क्या यह पाठ 2026-27 में है?

हाँ, यह क्षितिज भाग 2 का तीसरा पाठ है।

PDF कैसे मिलेगा?

ऊपर दिए लिंक से बिना साइनअप मुफ़्त PDF डाउनलोड करें।

निष्कर्ष (Conclusion)

आत्मकथ्य हमें विनम्रता और जीवन के यथार्थ को सहजता से स्वीकार करना सिखाती है। प्रतीकों, कारणों और काव्य-सौंदर्य की तालिका दोहराकर इस पाठ के सभी प्रश्नों के लिए तैयार रहें।

और नोट्स (More Notes): Class 10 Hindi Kshitij Chapter 2: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद notes | Class 10 Hindi Kshitij Chapter 4: उत्साह और अट नहीं रही है notes | All Class 10 Hindi notes

लेखक परिचय (Author Bio): ये नोट्स Nextoper Editorial Team ने तैयार और जाँचे हैं – CBSE हिंदी शिक्षकों का समूह, जो NCERT पाठ्यपुस्तक और पिछले बोर्ड प्रश्नपत्रों के पैटर्न के आधार पर पाठ-वार नोट्स बनाते हैं।

अद्यतन जानकारी (Freshness Note): ये नोट्स NCERT कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 2 (Reprint 2026-27, CBSE Hindi A) और 2026-27 सत्र के CBSE पाठ्यक्रम पर आधारित हैं। अंतिम जाँच: 10 नवंबर 2026।